Part III Hon. VIII
देवपाल का नालंदा ताम्रपत्र

1. "Nalanda copper plate of Devapala"

Ans → देवपाल का प्रस्तुत ताम्रपत्र अभिलेख नालंदाविहार नगर से मिला था। इस लेख से मालूम होता है कि पाल राजाओं का दक्षिणपूर्वी एशिया के देशों से मैत्रिक सम्बन्ध था। इस लेख की भाषा संस्कृत है तथा इसकी लिपि Proto-Bangali है।

प्रस्तुत अभिलेख उस काल के दूसरे लेखों के ही समान 'ओ स्वस्ति' से आरंभ होता है।

धर्मपाल के पश्चात् इसका उत्तराधिकारी देवपाल हुआ। उसने पालवंश के यश और मर्यादा को जिसकी स्थापना धर्मपाल ने की थी, सम्भाल कर रखा। इसके अतिरिक्त उसने धर्मपाल के अधूरे कार्य को पूरा किया तथा पाल राज्य की सीमा को विस्तृत किया।

प्रस्तुत लेख में नालंदा के एक विहार को पाँच ग्राम दान देने का उल्लेख है। इस अभिलेख की बत्तीसवाँ पंक्ति अत्यन्त महत्वपूर्ण है इससे मालूम होता है कि भिक्षुओं के रहने के लिए नालंदा में एक विहार का निर्माण जावा देश के राजा बालपुत्र देव के द्वारा हुआ था। उसका सम्बन्ध शैलेन्द्र कुल से था। भिक्षुओं को विहार हेतु बना यह विहार अत्यन्त सुन्दर एवं लम्बा चौड़ा था।

जावा नरेश बालपुत्र देव के बारे में अधिक विवरण नहीं दिया गया है। वह शैलेन्द्र वंश का था। उसको स्वर्णद्वीप का राजा बताया गया है। स्वर्णद्वीप का सजा नाम महाभारत, जातक, कथासरितसागर आदि प्राचीन धर्मग्रन्थों में आता है। महाजनक जातक के अनुसार इसके साथ भारत का प्राचीन व्यापारिक सम्बन्ध था। डुब्रेल महोदय के विचार में यव द्वीप और स्वर्णद्वीप का प्रयोग क्रमशः जावा और सुमात्रा के लिए प्राचीन काल में होता था। प्रस्तुत लेख के तैयार करनेवालों को संभवतः इन द्वीपों के अलग-अलग पहचान के बारे में नहीं मालूम था। ऐसा प्रतीत होता है कि स्वर्णद्वीप का प्रयोग इन दोनों के लिए किया होगा।

Scanned with CamScanner

प्रस्तुत अभिलेख के अध्ययन से मालूम होता है कि शैलेन्द्रवंश का राज्य आठवीं शदी ई० के अंतिम चरण में हुआ। एक लेख मलाया के लिगौर तथा दूसरा जावा के वज्रमास नामक स्थानों से उपलब्ध हुआ है। केलुटक नामक स्थान से इस वंश का तीसरा लेख प्रकाश में आया है। इन लेखों के अध्ययन से पता चलता है कि आठवीं सदी ई० के अन्त में शैलेन्द्र वंश राजाओं का राज्य मलाया और जावा में था। जावा के राजा बालपुत्र देव द्वारा इस बिहार के निर्माण के पश्चात इसकी देखरेख और इसमें निवास करने वाले भिक्षुओं के भरण पोषण का प्रश्न खड़ा हुआ।

इस कार्य के लिए वह अपना एक दूत तत्कालीन पालनरेश देवपाल के पास भेजा। इस दूत ने राजा से निवेदन किया है कि बिहार की देख-रेख के लिए वह कुछ ग्रामों को दानस्वरूप प्रदान करें। इस घटना से ऐसा प्रतीत होता है कि पाल राजाओं का जावा के शासक के साथ मित्रतापूर्ण सम्बन्ध था। इसी कारण देवपाल दूत की प्रार्थना पर ग्रामों को दानस्वरूप दिया। पालनरेश स्वयं बौद्धमत का अनुयायी था। अतः बौद्ध बिहार को दान देने में देवपाल को कोई आपत्ति नहीं हुई।

प्रस्तुत ताम्रपत्र के अध्ययन से मालूम होता है कि श्रीनगर भुक्ति (वर्तमान पटना डिविजन) के गाँव दान में दिये गये थे। तीन गाँव राजगृह विषय में और अन्य दो गया विषय में स्थित थे। इन गाँवों की आय धर्मग्रन्थों को लिखने तथा बिहार में निवास करने वाले भिक्षुओं के कपड़े तथा खाने पीने में व्यय हो सकता था। साथ ही आय का एक भाग विहार में रहने वाले भिक्षुओं के दावा दारु के लिए सुरक्षित रख लिया जाता था।

जावा नरेश के दूत का नाम बलवर्मन दिया हुआ है। इसके बारे में अधिक जानकारी नहीं है। प्रस्तुत लेख में उसे "व्याघ्रतटीमण्डलाधिपति" कहा गया है। इसके अतिरिक्त धर्मपाल के खालिमपुर ताम्रपत्र में इस नाम के व्यक्ति को अधिपति

कहा गया है। यह अत्यन्त आश्चर्य की बात है कि उसे ही क्यों दूत के रूप में चुना गया। दूसरे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि गंगाधारी के निकले मार्ग तथा बालपुत्र देव के द्वीप राज्य के बीच किसी प्रकार का मैत्रक सम्बन्ध अवश्य हो रहा होगा। ऐसा प्रतीत होता है कि सम्भवतः पूर्वी भारत का शैलेन्द्रवंश के राज्य से सांस्कृतिक सम्बन्ध अवश्य होगा। इसके अतिरिक्त पूर्वी समुद्रतट के द्वारा वाणिज्य और व्यापार के क्षेत्र में भी परस्पर सम्बन्ध रहा होगा जैसा कि जातक कालीन भारत में था।

शैलेन्द्रवंश और भारत के सम्बन्ध की पुष्टि कुछ दूसरे अभिलेखों से होती है। चोलवंश के एक लेख से स्पष्ट है कि चोलराजा राज-राज केशरीवर्मन जो ९८५ से १०१३ के बीच राज्य करता था। शैलेन्द्रवंश से गहरा सम्बन्ध था। इससे उल्लेख है कि श्री विजय के स्वामी ने नागपट्टन के स्थान पर एक बहुत ही बड़े बिहार का निर्माण करवाया था। यह उल्लेख नालंदा के प्रस्तुत लेख के विवरण से बहुत कुछ मिलता जुलता है क्योंकि इसमें भी चोलराजा द्वारा दान में दिये गये ग्रामों का उल्लेख है। अतः यह इस कथन की पुष्टि करता है कि प्राचीन काल में भारत का अन्तराष्ट्रीय सम्बन्ध दूतों के माध्यम से हुआ करता था।

पूर्वी भारत का सम्बन्ध ताम्रलिप्ति (ताम्रलुप्त) नामक बंदरगाह द्वारा था। सम्भवतः इन्हीं सम्बन्धों के कारण दक्षिण पूर्वी एशिया पर भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का गहरी एवं अमिट प्रभाव पड़ी।

पाल नरेश देव पाल और बालपुत्र देव के सम्बन्धों में किसी प्रकार का राजनीतिक कारण नहीं दिख पड़ता है। दक्षिण पूर्वी द्वीप समूहों में पालनरेशों के काल में ही बौद्ध धर्म का अत्यधिक प्रचार हुआ होगा। इसी कारण से स्वर्णद्वीप के राजा बालपुत्र देव ने बौद्ध बिहार बनवाया और देवपाल से उनकी देखरेख के लिए दूत के माध्यम से दान की याचना की जो सस्कार स्वीकार किया गया था।

अतः हम कह सकते हैं कि पाल नरेश देवपाल के नालंदा ताम्रपत्र का अन्तराष्ट्रीय महत्व है क्योंकि यह भारत का दक्षिण पूर्वी द्वीपों के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध प्रकट करता है।

प्रस्तुत लेख पालकालीन शासन व्यवस्था पर भी कुछ प्रकाश डालता है। सम्पूर्ण राज्य मुक्तियों में बटा हुआ था फिर विषयों में और विषय ग्रामों में विभक्त थे। विभिन्न राजकीय पदाधिकारियों का उल्लेख भी इस लेख में मिलता है जैसे महादण्डनायक, महाप्रतिहार, महासामंत, कुमारामात्य विषयपति आदि। अंत में हम कह सकते हैं कि भारत का दक्षिण पूर्वी एशिया के द्वीप समूहों के साथ गहरा सम्बन्ध था जैसा कि देवपाल के नालंदा ताम्रपत्र एवं चोल लेखों से मालूम होता है।

Scanned with CamScanner